



क्यों व्यर्थ चिंता करते हो? किससे व्यर्थ डरते हो?
कौन तुम्हें मार सकता है? आत्मा न पैदा होती है, न मरती है ।

जो हुआ, वह अच्छा हुआ। जो हो रहा है, अच्छा हो रहा है ।

जो होगा, वह भी अच्छा ही होगा ।

तुम भूत का पश्चाताप न करो । भविष्य की चिंता न करो ।

वर्तमान चल रहा है, उसका आनन्द लो।

तुम्हारा क्या गया, जो तुम रोते हो?

तुम क्या लाये थे, जो तुमने खो दिया?

तुमने क्या पैदा किया था, जो नाश हो गया?

न कुछ तुम लेकर आये, जो लिया यहीं से लिया ।

जो दिया, यहीं पर दिया ।

खाली हाथ आये, खाली हाथ चले ।

जो आज तुम्हारा है, कल किसी और का था

परसों किसी और का होगा ।

तुम इसे अपना समझकर मन मग्न हो रहे हो

बस यही प्रसन्नता तुम्हारे दुःख का कारण है ।

परिवर्तन ही संसार का नियम है ।

जिसे तुम मृत्यु समझते हो, वही तो जीवन है ।

एक क्षण में तुम करोड़ों के स्वामी बन जाते हो,

दूसरे ही क्षण में तुम दरिद्र हो जाते हो ।

मेरा-तेरा, छोटा-बड़ा, अपना-पराया, मन से मिटा दो,

विचार से हटा दो,

फिर सब तुम्हारा है, तुम सबके हो ।

न शरीर तुम्हारा है, न तुम शरीर के हो ।

यह शरीर अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी एवं आकाश से बना है और
इसी में मिल जायेगा । परन्तु आत्मा स्थिर है, फिर तुम क्या हो?

तुम अपने आप को भगवान को अर्पित करो ।

यही सबसे उत्तम सहारा है ।